ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

'भगवत्पाद आदि शंकराचार्य स्मृति' व्याख्यान

वेदांत दर्शन में है संकट का समाधान : प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

वर्धा : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और दर्शन एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय दार्शनिक दिवस के उपलक्ष्य में 26 जुलाई को महादेवी वर्मा सभागार में 'भगवत्पाद आदि शंकराचार्य स्मृति' व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि दुनिया संकट से जूझ रही है, ऐसे में वेदांत दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा में ही इस संकट का समाधान खोजा जा सकता है। उन्होंने कहा कि भारत में निर्गुण संत काव्य की समृद्ध परंपरा रही है और इन संतों की कविता के सूत्र वेदांत से जुड़े हुए हैं।हमें वेदांत दर्शन को दैनंदिन जीवन में अपनाकर ज्ञानात्मक एकता की दिशा में अपना रास्ता सुगम बनाने की जरूरत है। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य प्रो. रन्जन त्रिपाठी ने'आदिशंकराचार्य का जीवनवृत्त तथा राष्ट्र गौरवोत्थान में उनकी भूमिका' पर अपनी बात रखी। प्रोफ़ेसर त्रिपाठी ने विद्यार्थीयों से सीधे संवाद को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हुए बताया कि हमारी प्राचीनतम काल से अब तक अन्वरत जारी भारतीय ज्ञान परम्परा से अनुप्राणित शिक्षा पद्धति का अंगीकार कर स्वयं में विद्या विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने भगवद्पाद शिवावतार आदि शंकराचार्य के काल निर्धारण को विभिन्न संवत्सरों का उदाहरण देते हुए ई.पू508 वर्ष सिद्ध किया । आचार्य त्रिपाठी ने भगवद्पाद शिवावतार आदि शंकराचार्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भगवद्पाद ने चारों पीठों की स्थापना विशेष-विशेष उद्देश्यों से की थी जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के अविच्छिन्न विकास के लिए किया है जो वर्तमान में नई शिक्षा नीति की आत्मा के रूप में सर्वस्वीकृत हो भारत के सभी विश्वविद्यालयों में पठन-पाठन का मुख्य केन्द्र है।उन्होंने विश्वविद्यालय में हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना करने का सुझाव देते हुए कहा कि भगवान शंकर को जानना यानी राष्ट्रीय एकता, समाज सुधार, सनातन धर्म की पुनर्स्थापना एवं स्वयं को जानना है। प्रो. त्रिपाठी ने आचार्य शंकर द्वारा चार पीठों और दसनामी सम्प्रदाय की स्थापना की चर्चा की और उनके द्वारा बौद्धिक एवं सार्वभौमिक सुरक्षा की दृष्टि से किए गए कार्यों को भी विस्तार से समझाया।

कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के दर्शन विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने 'आचार्य शंकर का अद्वैत वेदांत : सार्वभौमिकता एकात्मकता का दर्शन' विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि पूरी दुनिया में ज्ञान का समरूपीकरण हो रहा है।उन्होंने कहा कि भारत को ज्ञानात्मक एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास आदि शंकराचार्य ने किया है। भगवत्पाद को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत बताते हुए उन्होंने कहा कि भारतीयता का दर्शन ही अद्वैत वेदांत है और यह भारतीय परंपरा की रीढ़ की हड्डी के समान है।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण संयोजक तथा दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ. विपिन कुमार पाण्डेय ने किया। स्वागत व्यक्तव्य में डॉ. पाण्डेय ने प्रोफ़ेसर रन्जन त्रिपाठी को भारत के विभिन्न विश्वविद्यालय में चल रहे हिन्दू अध्ययन कार्यक्रम का महान शिल्पकार तथा पुरोधा बताया। कार्यक्रम का संचालन दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने प्रोफ़ेसर त्रिपाठी को भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वर्णिम भविष्य बताते हुए उनकी अनेकशः प्रशंसा किया । विवि के कुलसचिव एवं दूर शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द पाटील ने प्रोफ़ेसर रन्जन त्रिपाठी का आभार जताते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली का विशेष रूप से आभार किया। दीप प्रज्ज्वलित कर एवं कुलगीत से कार्यक्रम का प्रारंभ तथा राष्ट्रगान के साथ समापन किया गया। डॉ. जगदीश नारायण तिवारी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की सफलता के लिए सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. रणन्जय सिंह ने सहयोग किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305